Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 10, (मार्च, 2026)
पृष्ठ संख्या 24–26

भारतीय किसानों को खेती में अग्रिम अनुशंसा

प्रदीप कुमार[1], गुलाबचन्द यादव[2], विशाल सिंह[3], रमेश खरवार[4] एवं सूरज पासवान[5]

[1,3,4,5] शोध छात्र, [2]आचार्य
उद्यान विज्ञान विभाग
बाबासाहेब भीमराव अंबेकर विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.), भारत।

Email Id: – anamikachaurasiya@bhu.ac.in

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। हमारी कृषि पारंपरिक तरीके से चलती आई है, लेकिन समय के साथ बदलते हुए पर्यावरणीय, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के कारण पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ अब उतनी प्रभावी नहीं रही हैं। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती जनसंख्या, भूमि की घटती उर्वरता, पानी की कमी और आधुनिक कृषि तकनीकों की उपेक्षा जैसी समस्याओं ने भारतीय किसानों के सामने नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं।

इन समस्याओं का समाधान ढूँढने के लिए कृषि क्षेत्र में नवाचार और उन्नत तकनीकों का अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यही कारण है कि आज हमें किसानों को कृषि में उन्नति और स्थिरता लाने के लिए आधुनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, किसानों को समग्र विकास और बेहतर जीवनशैली के लिए विभिन्न नवाचारों, डिजिटल तकनीकों सतत कृ षि पद्धतियों और जलवायु के अनुकूल उपायों के बारे में जागरूक करना बेहद जरूरी है।

यह"भारतीय किसानों को खेती में अग्रिम अनुशंसा"शीर्षक से प्रस्तावित दस्तावेज कृषि क्षेत्रकेसभी पहलुओं, जैसे कि स्मार्ट कृषि, जल प्रबंधन, जैविक खेती, कीट–रोग नियंत्रण, फसल चक्र, वित्तीय योजनाएँ और विपणन प्रणाली आदि पर आधारित है। इन अनुशंसाओं का उद्देश्य भारतीय किसानों को आधुनिक कृ षि पद्धतियों और तकनीकों से परिचित कराना है, ताकि वे अपनी खेती को अधिक लाभकारी, स्थिर और पर्यावरण के अनुकूल बना सकें।

इस दस्तावेज में दी गईअनुशंसाएं, न केवल कृषि उत्पादन को बढ़ाने में मदद करेंगी, बल्कि यह किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएंगी और कृषि क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को मजबूत करेंगी। इन उपायों के माध्यम से हम कृषि क्षेत्र को नया रूप दे सकते हैं, जो भारतीय कृषि को 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार कर सके।

कृषि क्षेत्र में इन उन्नत सिफारिशों को अपनाने से भारतीय किसान न केवल अपनी पैदावार में वृद्धि कर सकते हैं, बल्कि पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की भी रक्षा कर सकते हैं। इस प्रकार, यह कदम भारत को एक सतत और समृद्ध कृषि राष्ट्र बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

भारतीय किसानों के लिए कृषि में उन्नति के लिए कुछ महत्वपूर्ण और आधुनिक सिफारिशें

1. **स्मार्ट कृषि:**

स्मार्ट कृषि तकनीकों का उपयोग करके किसान अपनी खेती को अधिक लाभकारी और दक्ष बना सकते हैं। इसमें विभिन्न डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके कृषि कार्यों को बेहतर तरीके से किया जा सकता है। इसके तहत–

- **मोबाइल ऐप्स**: कृषि ऐप्स जैसे कि "किसान मित्र", "भारत कृषि ऐप", का उपयोग करके किसान मौसम का पूर्वानुमान, फसल रोग की पहचान और खेती की सलाह प्राप्त कर सकते हैं।
- **सेंसर और ड्रोन**: मिट्टी की नमी, तापमान और अन्य तत्वों की निगरानी के लिए स्मार्ट सेंसर लगाए जा सकते हैं। ड्रोन का उपयोग फसलों की स्थिति की निगरानी और कीटनाशक छिड़काव के लिए किया जा सकता है।
- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस** : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक का इस्तेमाल करके फसल की पैदावार, कीटों का प्रकोप और मौसम की भविष्यवाणी को समझा जा सकता है, जिससे उत्पादन में सुधार होता है।

2. सतत कृषि:

सतत कृषि एक ऐसी पद्धति है जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना कृषि उत्पादन को बढ़ाती है। इसमें मुख्य बातें हैं:

- **जैविक खेती**: रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की बजाय जैविक उर्वरकों का प्रयोग करना मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखता है। यह स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है और बाजार में ऑर्गेनिक उत्पाद की मांग भी बढ़ रही है।
- **विविध फसलें उगाना**: एक ही फसल को बार–बार उगाने से मिट्टी की उर्वरता घट सकती है। इसलिए एक वर्ष में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाना जैसे दलहनों, तिलहनों और अनाजों का मिश्रण मिट्टी की सेहत को बनाए रखता है।

3. जल प्रबंधन:

भारत में जल संकट एक महत्वपूर्ण समस्या है, और इसके प्रबंधन के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

- **टपक सिंचाई**: यह एक पानी बचाने की पद्धति है, जिसमें पानी सीधे पौधे की जड़ में दिया जाता है, जिससे पानी का अपव्यय कम होता है और फसल को पर्याप्त जल मिलता है।
- **वर्षा जल संचयन**: वर्षा के पानी को इकट्ठा करने की तकनीक से पानी की कमी से निपटा जा सकता है, खासकर सूखा और जल संकट वाले क्षेत्रों में।

4. प्राकृतिक खादों का उपयोग:

- **वर्मीकम्पोस्ट**: यह जैविक खाद के रूप में प्रयुक्त होती है, जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है और पौधों को पोषण प्रदान करती है।
- **गोबर गैस**: गोबर से उत्पन्न गैस का उपयोग ऊर्जा के स्रोत के रूप में किया जा सकता है और गोबर से बनी खाद का इस्तेमाल खेतों में किया जा सकता है।

5. कीट और रोग प्रबंधन:

- **जैविक कीटनाशक**: रासायनिक कीटनाशकों की बजाय प्राकृतिक

कीटनाशकों का उपयोग फसलों के लिए सुरक्षित होता है। जैसे नीम का तेल, बर्ड किट या अन्य बायो–कीटनाशक।

- **संवेदनशीलता परीक्षण:** कृषि विज्ञान केंद्रोंके माध्यम से फसल की बीमारियों की पहचान की जा सकती है, जिससे किसान जल्दी उपचार कर सकते हैं और नुकसान को कम कर सकते हैं।

6. कृषि उत्पादों का विपणन:

- **ऑनलाइन विपणन:** किसान अपने उत्पादों को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाने के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर सकते हैं। जैसे "कृषि बाजार" ऐप या "ग्रॉसरी डिलीवरी" सेवाओं का इस्तेमाल।
- **कृषि उत्पादन संगठन** : जिसमें किसानों का एक समूह बनता है, जो सामूहिक रूप से अपनी फसलों का उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन कर सकता है। इससे लागत घटती है और मुनाफा बढ़ता है।

7. फसल चक्र का पालन:

- **फसल विविधता:** एक ही फसल को बार–बार उगाने से मिट्टी की उर्वरता घटती है और कीटों का प्रकोप बढ़ता है। इसके बजाय, किसान फसल चक्र का पालन करें, जिसमें एक फसल के बाद दूसरी तरह की फसल उगाई जाती है। जैसे गेंहू के बाद दलहन या मक्का के बाद सूरजमुखी।

8. आधुनिक उपकरणों का उपयोग:

- **कृषि यंत्र:** किसानों को आधुनिक उपकरण जैसे ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, प्लांटर आदि का उपयोग करना चाहिए, जो समय और श्रम की बचत करते हैं। इनसे खेती अधिक प्रभावी और कम समय में की जा सकती है।
- **रोबोटिक्स और ऑटोमेशन:** कुछ क्षेत्रों में स्वचालित मशीनों का उपयोग हो रहा है, जैसे कि फसल की निराई, रोपाई, और निगरानी।

9. वित्तीय सहायता और बीमा:

- **कृषि ऋण और अनुदान:** सरकार द्वारा कृषि ऋण योजनाएं प्रदान की जाती हैं, जिससे किसान कम ब्याज दर पर ऋण प्राप्त कर सकते हैं और अपनी खेती के लिए जरूरी संसाधनों का प्रबंध कर सकते हैं।
- **कृषि बीमा:** प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए सरकार द्वारा कृषि बीमा योजनाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। यह किसान को फसल नुकसान पर वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

10. साक्षरता और प्रशिक्षण:

- **कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम:** किसानों को कृषि विज्ञान और आधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी देने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इससे किसानों को नई तकनीकोंको अपनाने में मदद मिलती है।
- **कृषि विज्ञान केंद्र** : इन केंद्रों से किसान विशेषज्ञों से सलाह प्राप्त कर सकते हैं और अपनी कृषि पद्धतियों में सुधार कर सकते हैं।

इस प्रकार उपरोक्त अनुशंसाओं का लाभ उठाकर किसान भाई अपनी खेती को लाभदायक बना सकते है।